Theory of forgetting

Kuman Patil
Dept. of Psychology
Maharaja College Ara

BA I, Psychology (H)
Paper I, General Psychology

Topic - Disuse and Decay Theory of forgetting (अनुप्रयोग - क्षय - सिद्धान्त)

विस्मरण का यह सिद्धान्त स्मृतिचिन्हों का क्रमिक विलोप सिद्धान्त के नाम से जाना जाता है। स्मृतिचिन्ह स्मृति की एक ऐसी स्थिति है जिसका आकार और बनावट अलग-अलग व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है अर्थात इसमें वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है। शिक्षण अनुभव के प्रभाव इसी स्मृति-चिन्ह पर पड़ते हैं और स्नायविक क्रिया (neural activity) के फलस्वरूप शिक्षण अनुभवों के स्मृतिचिन्ह (Memory traces) बनते हैं।

उपरोक्त सिद्धान्त के अनुसार अभ्यास के कारण ये स्मृतिचिन्ह दृढ़ होते जाते हैं तथा अनुप्रयोग (disuse) के फलस्वरूप स्मृतिचिन्ह मिटते जाते हैं। इस प्रकार विस्मरण काल व्यवधान (Lapse of time) के कारण प्रभावित होता है अर्थात शिक्षण क्रिया के बाद धारण-न्यायांतर की अवधि (time of retention interval) जितनी लंबी होती है व्यक्ति एक में बने स्मृतिचिह्न का ह्रास (decay of memory traces) भी उतना ही अधिक होगा।

ब्राउन (Brown, 1958) ने अपने अध्ययन में प्रयोग का इसका समर्थन किया है।

इन्होंने अल्पकालीन स्मरण (STM) के संबंध में एक प्रयोग किया। इसमें उन्होंने 4 से 7 सेकंड के अंतराल पर दो भिन्न अवस्थाओं में धारण क्रिया की जाँच की। पहली अवस्था के धारण - मध्यांतर काल (retention interval) में 5 सेकंड तक सीखे गये निरर्थक सामग्री के मानसिक रूप से दुहराने की संभावना को नियंत्रित किया गया। जबकि दूसरी अवस्था में इसे नियंत्रित नहीं किया गया। पाया गया की दूसरी अवस्था के तुलना में पहली अवस्था में विस्मरण अधिक हुआ। हेब (Hebb, 1966) मेल्टन (Melton 1963) एवं मिलर (Miller, 1956) ने भी अल्पकालीन स्मरण की सूचनाओं के आधार पर इस सिद्धान्त का समर्थन किया है।

आलोचना एवं मूल्यांकन

(1) एबिंगहौस (Ebbinghaus) के प्रयोग में प्राप्त तथ्य धारण - मध्यांतर काल के साथ - साथ सूलने की मात्रा में वृद्धि का प्रमाण मिलता है। सूलने की मात्रा में वृद्धि केवल समय व्यवधान (Lapse of time) के कारण होते हैं। इस संदर्भ में इस तथ्य की व्याख्या धारण - मध्यांतर काल में किसी प्रकार की बाधा या हस्तक्षेप के संदर्भ में भी की जा सकती है।

(2) कुछ ऐसी भी स्थितियाँ होती हैं जिनमें

पूर्व अनुभव या मौलिक शिक्षण/सामग्री सामग्री बिना अभ्यास के लंबे समय तक याद रहती है जैसे तैरना, गाड़ी चलाना, किसी मशीन का संचालन आदि उपयोग में नहीं रहने पर भी अधिक समय तक सुरक्षित रह सकते हैं।

(3) दैनिक जीवन में कुछ ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं जिनसे इस सिद्धांत का समर्थन नहीं मिलता है जैसे कल्पित स्मृतिभ्रंश (supposed memory loss) की पुनः प्राप्ति, वृद्धावस्था, उन्मत्त रोगियों (delirious patient) आदि।

(4) संस्मरण (reminiscence) की घटना भी अनुप्रयोग सिद्धान्त को खंडित करती है संस्मरण की घटना से शिक्षण के तत्काल बाद धारण-मध्यांतर काल के प्रारंभ से प्रतिधारण घटने के बजाय बढ़ते हैं। इस तरह संस्मरण की घटना से अनुप्रयोग सिद्धान्त का पूर्ण समर्थन नहीं मिलता है।

अनुप्रमाण सिद्धान्त की उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद इसे पूर्णतः अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। हिलगार्ड, एटकिंसन एवं एटकिंसन ने स्पष्ट किया है कि समय व्यवधान के कारण स्नायुमण्डल में कुछ अवश्यंभावी परिवर्तन होते हैं तथा इन परिवर्तन के परिणाम स्वरूप विस्मरण की कुछ घटनाएँ होती हैं।

अतः उपरोक्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि विस्मरण उद्दीपक हस्तक्षेप क्रिया द्वारा होता है। मध्यांतर/धारण काल में अनुप्रमाण के कारण होता है।